IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तराखण्ड के पर्वतीय समाज में लोक जनजीवन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

सुमन कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
समाजशास्त्र
पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, रामनगर, नैनीताल

सारांश–

प्रस्तुत शोध आलेख उत्तराखण्ड के पर्वतीय समाज में लोकजनजीवन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण पर केन्द्रित है। सामान्य रूप से लोक जनजीवन किसी विशेष समुदाय तथा समूह या वृहत समूह में सामान्यतया निवास करने वाले सदस्यों व्यक्तियों के रहन–सहन, दैनिक दिनचर्या रीति, रिवाज त्यौहार मेले, सामुदायिकता की भावना सांस्कृतिक गतिविधियां, परस्पर भाईचारा को प्रकट करता है। लोकजनजीवन किसी व्यक्ति के समाजीकरण में सबसे बड़ी भूमिका को निभाता है। उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का लोक जनजीवन की संरचना का मुख्य आधार यहां की भौगोलिक स्थिति, आर्थिक संसाधन भूगर्भीय संरचना तथा पर्यावरणीय प्रस्थितियां निर्धारित करती है। इन पर्वतीय क्षेत्रों में छोटे–बड़े ग्रामीण समुदाय निवास करते हैं, जो सम्मिलित रूप से एक बड़े समुदाय का निर्माण करते हैं। उत्तराखण्ड राज्य की भौगोलिक संरचना के अन्तर्गत उत्तरी क्षेत्र में अधिक ऊँचे बर्फ से ढके पर्वतों से लेकर दक्षिण के क्षेत्र में मैदान तक फैली हुयी है। राज्य का मात्र 13 प्रतिशत भू भाग मैदानी है। अधिकतर 86 प्रतिशत क्षेत्र पर्वतीय है। उत्तराखण्ड को वृहद हिमालय, उच्च हिमालय, मध्य हिमालय, लघु हिमालय, इन धाटियं, शिवालिक, भावर, तराई और गंगा के मैदान को लेकर मुख्तया 08 भैगोलिक क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है। यदि हम राज्य के प्रमुख आर्थिक संसाधनों की बात करें तो इसमें कृषि, जल विद्युत, पर्यटन, उद्योग तथा वनसंसाधन है। यहां धार्मिक संस्कृतियों का केन्द्र पौराणिक समय से ही रहा है। बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री चारधाम इसकी भूमि पर विराजमान है।

कीवर्ड: –भौगोलिक कारक, सांस्कृतिक लोक जीवन, चारधाम पर्यटन, वन संसाधन, सांस्कृतिक मेल जोल प्रकृति प्रेम, पशुपालन, परम्परागगत उत्पादन, आध्यात्मिक मेल जोल।

परिचय

प्राचीन परम्परागत रूप से उत्तराखण्ड राज्य तथा इसके पर्वतीय क्षेत्रों में आजीविका तथा अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि संसाधन रहा है। पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि एवं पशुपालन का कार्य होता चला आ रहा है। पर्वतीय क्षेत्रों में सीढ़ीनुमा खेतों पर कृषि कार्य होता है। इन क्षेत्रों के खेत मैदानी खेतों की तुलना में छोटे होते हैं। यहां का कृषि उत्पादन प्राकृतिक वर्षा पर अधिकतर रूप से निर्भर करता है और उत्पादन का सीधा प्रभाव मानसूनी वर्षा से पड़ता है। लोग ऊँचे–ऊँचे पहाड़ों पर गांवों के रूप में बसे हैं। कृषि के साथ–साथ पशुपालन पर्वतीय क्षेत्रों का प्रमुख आर्थिक, आजीविका का आधार है। लोगों का जीवन अपने पशुपालन तथा अपने दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति तथा वनों पर निर्भर है। यहां पर सुन्दर सदाबहार वन पाये जाते हैं, जिनके माध्यम से यहां के लोग गाय, भैंस, बकरी, बैल आदि पशुओं का मुख्य रूप से पालन करते हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि एवं पशुपालन के साथ छोटे–छोटे परम्परागत उद्योग एवं व्यवसाय भी किये जाते रहे हैं। किसी समाज का लोकजीवन उसके आर्थिक, भौगोलिक कारकों पर निर्भर करता है तथा इन्हीं कारकों का प्रभाव लोक संस्कृति पर भी पड़ता है। लोकसंस्कृतिक का निर्माण करने में किसी समाज की आथ्रिक, भौगोलिक एवं सामाजिक–सांस्कृतिक कारक उस क्षेत्र समाज के लोक जीवन को तय करते हैं। उत्तराखण्ड में गढ़वाल तथा कुमाऊँ के दो बड़े पर्वतीय क्षेत्र है। गढ़वाल का लोक जीवन, आध्यात्मिक और समृद्ध सामाजिक–सांस्कृतिक परम्पराओं का मेल–जोल है। जहां पर विभिन्न प्रकार की लोक कल्याणकारी परम्पराऐं, सांस्कृतिक उत्सव, मेले, संगीत लोकनृत्य पारम्परिक पहनावा, आभूषण का चलन पाया जाता है। यहां के लोग मधुर व्यवहार वाले तथा प्रकृति प्रेमी के रूप में जाने जाते हैं। यहां का लोकजीवन शान्तिमय, खुशहाल तथा आनन्दमयी रूप में गतिशील रहता है और यही समान लोकजीवन की पद्धति कुमाऊँ क्षेत्र की भी है।

प्रस्तुत अध्ययन कार्य में लॉटरी विधि से 150 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है तथा 150 उत्तरदाताओं का साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्रश्नावली का उपयोग करके किया गया है। अनुसंधान कार्य में प्रत्यक्ष अवलोकन का भी उपयोग किया गया है, परिणामों का विश्लेषण प्रतिशतता के द्वारा प्राप्त परिणामों को लेकर किया गया है। आवश्यक चित्र, पाईचार्ट आदि का भी प्रदर्शन भी दिखाया गया है।

अनुसंधान क्षेत्र में लोक जीवन के अन्तर्गत सामुदायिक भावना का अध्ययन

सारणी संख्या – 01

	हाँ		नहीं		उदासीन		कुल
	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	उत्तरदाता
सामूहिक कार्य जैसे विवाह, पूजन, स्वच्छता, सुरक्षा तथा उन्नति के लिए मिलकर साथ–साथ कार्यों को करते हैं।	147	98.00%	00	00	03	2.0%	150

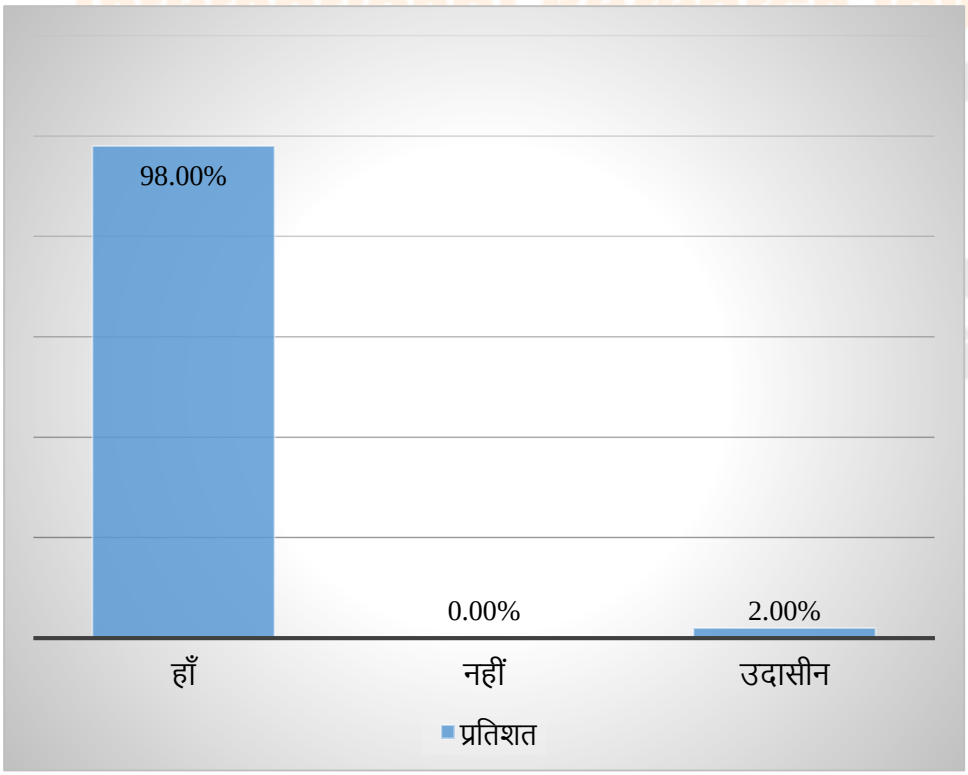

सारणी संख्या 01 में परिणामों के अनुसार लोक जनजीवन क्षेत्र में सामूहिक कार्य जैसे विवाह, पूजन, स्वच्छता सुरक्षा तथा उन्नति के मिल मिलकर साथ–साथ कार्यों को करने के सापेक्ष प्रश्नगत विषय पर 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हां में उत्तर दिया, जबकि मात्र 2 प्रतिशतउत्तरदाता प्रश्न पर उदासीन रहे, जबकि नहीं कहने वाला कोई भी उत्तरदाता नहीं पाया गया। निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि लगभग सभी लोगों का अनुसंधान क्षेत्र में लोक जनजीवन पर आधारित है।

अनुसंधान क्षेत्र में लोकजनजीवन के प्रति विचारों, दृष्टिकोणों का अध्ययन

सारणी संख्या 02

	आवृति	प्रतिशत	कुल उत्तरदाता
पूर्णतया प्रिय है तथा अपनाते हैं	97	64.64%	150
प्रिय है और अधिकांशतया अपनाते हैं	53	35.00%	

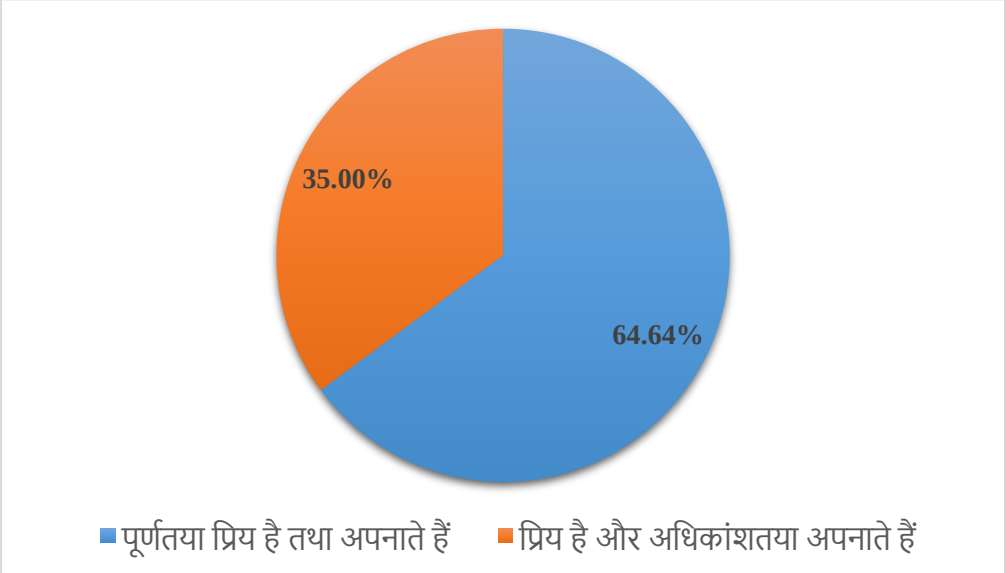

सारणी संख्या 02 में परिणामों के अनुसार 64 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतया प्रिय और अपनाने की बात अपने लोक जनजीवन जीवन में की और इसी विषय पर 35 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्हें अपना लोकजनजीवन की पद्धति प्रिय है और वह अधिकांशतया अपनाते हैं। निष्कर्ष यह निकलता है कि अनुसंधान क्षेत्र में लोग लोक जनजीवन के प्रति प्रेम तथा अपनाने का विचार रखते हैं और अपना रहे हैं।

अनुसंधान क्षेत्र में लोकजीवन शैली अपनाने के अन्तर्गत परम्परागत खानपान पहनावा, आभूषण आदि के उपयोग का अध्ययन

सारणी संख्या 03

	हाँ		नहीं		कुल
	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	उत्तरदाता
अपने लोक जन जीवन के अनुसार खान–पान, पहनावा, आभूषण आदि परम्परागत पद्धति को पूर्ण रूप से अपनाते हैं।	45	30.00%	105	70.00%	150

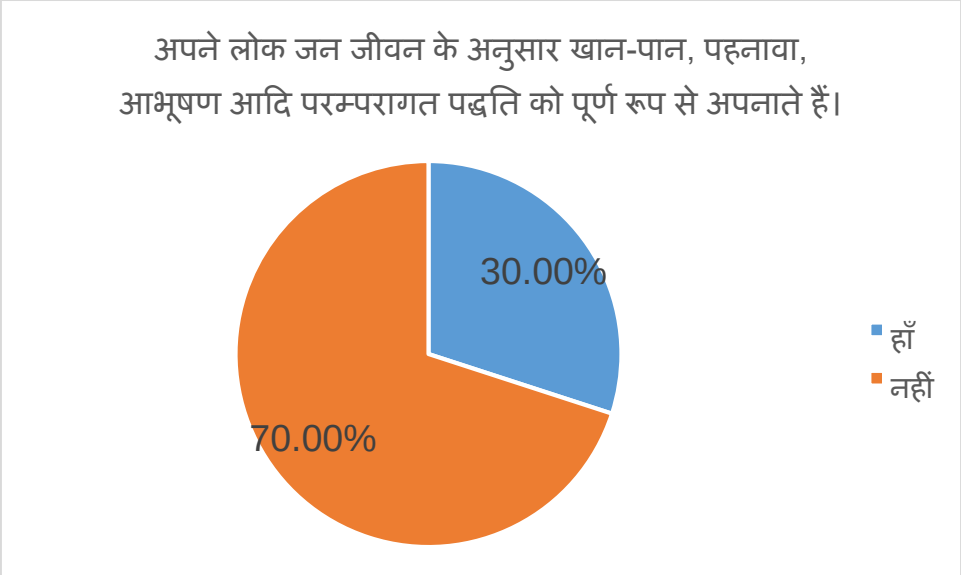

उपरोक्त सारणी संख्या 03 में प्राप्त परिणामों में लोक जनजीवन के अनुसार खान–पान, पहनावा, आभूषण आदि परम्परागत पद्धति को पूर्ण रूप से अपनाने के सापेक्ष 30 प्रतिशत उत्तरदाता ने हां में उत्तर दिया। वहीं इसी प्रश्न के सापेक्ष 70 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पूर्णरूप से अपनाने की बात में नहीं का उत्तर दिया। निष्कर्ष यह निकलता है कि अनुसंधान क्षेत्र में लोक पूर्णतया लोक जनजीवन की पद्धति को नहीं अपना रहे हैं।

अनुसंधान क्षेत्र में लोकभाषा को उपयोग करने के सन्दर्भ में अध्ययन

सारणी संख्या 04

	आवृति	प्रतिशत	कुल उत्तरदाता
अपनी लोक भाषा बोलते हैं	111	74.00%	150
अपनी लोक भाषा बोलते नहीं हैं परन्तु जानते हैं, समझते हैं	39	26.00%	

सारणी संख्या 04 के परिणामों के अनुसार क्षेत्र के 74 प्रतिशत उत्तरदाता अपनी लोक भाषा को बोलते हैं। जबकि 26 प्रतिशत उत्तरदाता अपनी लोकभाषा को जानते तथा समझते हैं, परन्तु बोलते नहीं है। निष्कर्षतया लोक भाषा के सापेक्ष अनुसंधान क्षेत्र में बोलने वालों की संख्या सत प्रतिशत नहीं है।

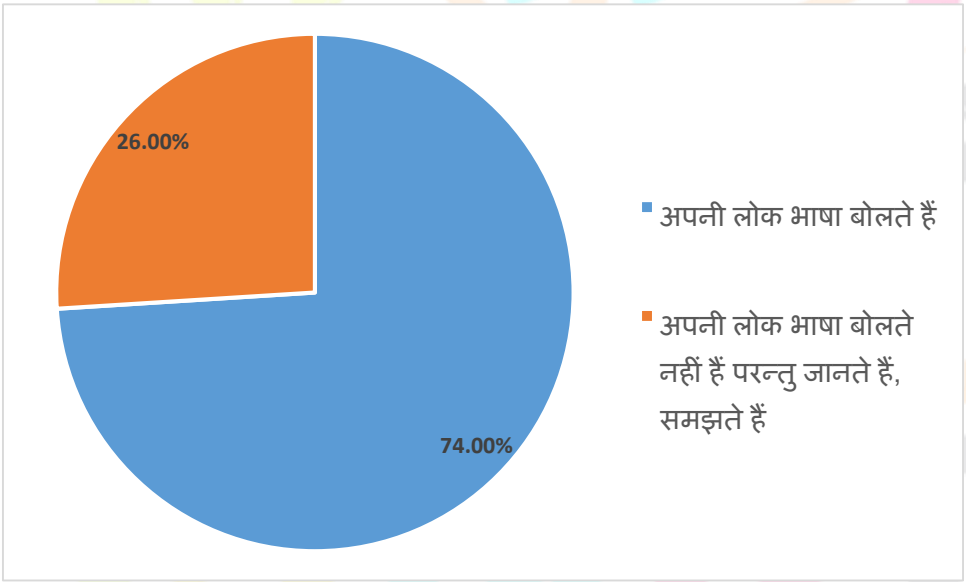

निष्कर्ष–उत्तराखण्ड के पर्वतीय समाज में लोक जनजीवन का समाजशास्ीय विश्लेषण करने के सन्दर्भ में सारणी संख्या 01 से 05 के परिणामों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अध्ययन क्षेत्र के सभी सदस्य अपने लोक जनजीवन की पद्धतियों को वर्तमान में भी अपना रहे हैं, वह प्रस्पर, सामुदायिक भावना, भाईचारा प्रेम आपसी सहयोग, परम्परागत खान–पान, पूजा पद्धति, कृर्षि कार्य, पशुपालन आदि को अपना रहे हैं तथा उन्हें अपना लोक जन जीवन और भाषा वेषभूषा आदि अधिक प्रिय है, परन्तु यह भी पाया गया कि लोग अपने परम्परागत लोक जनजीवन पद्धति में बदलाव को चाहते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

- हसनैन नदीम : समकालीन भारतीय समाज : एक समाजशास्त्रीय परिदृश्य, भारत बुक सेन्टर लखनऊ, उ0प्र0।
- मिश्रा राजन (2004) : ग्रामीण नेताओं के सामाजिक उद्भव एवं शक्ति संरचना के उभरते हुये प्रतिमानें का पता लगाना, आलेख कुरूक्षेत्र, पृ0सं0 32–34
- नौटियाल विकास – उत्तराखण्ड हिमालय ISBN 978-81-86844-99-1विनसर
- एडकिंसन ई0टी0 – हिमालयन डिस्ट्रिक्ट ऑफ नार्थ वेस्टर्न प्रोविन्सेज खण्ड, 2,3
- झा एवं श्रीमाली – प्राचीन भारत का इतिहास, प्रकाशक हिन्दी माध्यम, कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
- शर्मा डी0डी0 मनीषा – उत्तराखण्ड का सामाजिक एवं साम्प्रदायिक इतिहास ISBN-978-81-7988-104-0 अंकित प्रकाशन हल्द्वानी
- शर्मा कुमार राजेन्द्र – इंडियन सोसाइटी इन्सीटियूशन एण्ड चेन्ज ISBN-978-171566662अंटालाटिक प्रकाशन

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation